International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 29-09-2021, Accepted: 15-10-2021, Published: 29-10-2021
Volume 7, Issue 5, 2021, Page No. 118-119

राम काव्यधारा का विकास

ज्योत्स्ना आनंद
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध–आलेख का ध्येय मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम के जीवन प्रसंगों पर आधारित राम काव्यधारा के विकास को वर्णित करने का प्रयास मात्र है। 'राम' अखिल भारतीय जनमानस के हृदय का हार हैं। शोध–आलेख के माध्यम से राम काव्यधारा के बहुआयामी अखिल भारतीय सहित वैश्विक विकास को रेखांकित करना रहा है।

मूल शब्दः राम काव्यधारा, सात्विक, आख्यान–काव्य, लौकिक साहित्य, महाकाव्य

प्रस्तावना

'राम' हम सबके सुपरिचित हैं। युग–युगांतर से राम सात्विक रसिक जनों की रस–साधना का केंद्र बिंदु हैं। उनके जीवन से संबंधित प्रत्येक घटना निःसंकोच विश्वास किए जा सकने की सीमा तक प्रामाणिक है। रामकथा की एक स्पष्ट परंपरा हमें मिलती है परंतु उस परंपरा की प्रथम कड़ी जिसे स्वीकार किया जाए, इस पर काफी विवाद है।

इस संदर्भ में रेवरेंड फादर कामिल बुल्के "राम–कथारू उत्पत्ति और विकास" में लिखते हैं – "इक्ष्वाकु–वंश के संतों द्वारा जिस राम–कथा–संबंधी आख्यान–काव्य की सृष्टि प्रारंभ हुई थी, वह चौथी शताब्दी ई०पू० के अंत तक पर्याप्त मात्रा में प्रचलित हो चुका था। तब वाल्मीकि ने उस स्फुट आख्यान काव्य के आधार पर राम–कथा विषयक एक विस्तृत प्रबंध–काव्य की रचना की।"[1]

यह सर्वमान्य व सर्वविदित है कि वाल्मीकि ने रामकथा को सबसे पहले छंदोबद्ध करके काव्य के रूप में प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किया। परंतु रामकथा वाल्मीकि से पूर्व भी विद्यमान थी, इस तथ्य को भी नकारा नहीं जा सकता है। डॉ० बेवर आदि कुछ लोग बौद्ध जातक–कथाओं को रामायण की कथा का मूल मानते हैं। परंतु इन जातक–कथाओं से रामकथा पर कोई प्रकाश नहीं पड़ता है। ऋग्वेद, यजुर्वेद आदि में राम, सीता, दशरथ, जनक, सीता, परशुराम आदि पात्रों के नाम तो अवश्य मिलते हैं परंतु ये समस्त रामकथा के पात्र नहीं है वरन् अन्य पात्र हैं।

संस्कृत साहित्य में भी रामकाव्य परंपरा मिलती है। धीरेन्द्र वर्मा का मानना है कि रामकथा की परंपरा का प्रारंभ 'रामायण' से होता है। वाल्मीकि कृत 'रामायण' का उपलब्ध कलेवर बहुत बड़ा है क्योंकि उसमें प्रशिप्त अंश बहुत अधिक हैं। कुछ अन्य विद्वानों का मानना है कि बालकाण्ड एवं उत्तरकाण्ड प्रक्षिप्त हैं । 'रामायण' में 'राम' को एक वीर एवं तेजस्वी क्षत्रिय राजपुत्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। राम का पराक्रम अद्भुत है और उनकी मर्यादा एवं त्याग अनुकरणीय है। 'रामायण' के अतिरिक्त 'महाभारत' में भी आरण्यक पर्व, द्रोण, पर्व, शांति पर्व में स्फुट रूप से रामकथा मिलती है। इसमें राम को अवतारी पुरुष के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

बौद्ध धर्म में भी रामकथा मिलती है। बौद्धों ने जातक कथाओं में रामकथा को स्थान दिया है। प्राचीन बौद्ध साहित्य में रामकथा तीन जातकों (दशरथ जातक, अनामक, जातक दशरथ कथानकम्) में सुरक्षित है। 'दशरथ जातक' में राम, सीता व लक्ष्मण को भाई–बहन दिखाया गया है। 'अनामक जातक' में बौद्ध धर्म की प्रवृत्ति 'करुणा' तथा 'अहिंसा' की प्रधानता है। 'दशरथ कथानकम्' में सीता या किसी अन्य राजकुमारी का उल्लेख नहीं है और दशरथ की जम्बू द्वीप का राजा बताया गया है।

जैन धर्म में हमें विस्तृत रामकथा साहित्य मिलता है। यहाँ राम, लक्ष्मण और रावण को जैन मतावलंबी दिखाया गया है। विमल सूरी कृत 'पउम चरिउ' और गुणभद्राचार्य कृत 'उत्तरपुराण' इनके प्रमुख काव्य हैं। 'उत्तरपुराण' में सीता को रावण की पुत्री बताया गया है। लक्ष्मण की सोलह हजार रानियाँ और राम की आठ हजार रानियाँ बताई गई हैं।

संस्कृत लौकिक साहित्य भी रामकथा से अछूता नहीं है। कालिदास कृत 'रघुवंश' एक सुप्रसिद्ध महाकाव्य है जिसमें राम विष्णु के अवतार हैं और रावण शिव भक्त हैं। इसके अतिरिक्त महाकवि कुमारदास कृत 'जानकी हरणम्' महाकाव्य में राम के राज्याभिषेक से लेकर उसके राज्य तक की कथा है।

संस्कृत नाटक साहित्य में भी रामकथा परंपरा के दर्शन होते हैं। महाकवि भास (प्रतिमा नाटक एवं अभिषेक नाटकम्), भवभूति (महावीर चरित, उत्तर रामचरित), राजशेखर (बाल रामायण), जयदेव (प्रसन्नराघव), हृदयराम (हनुमन्नाटक) आदि ने भी अपने नाटकों में रामकथा को स्थान दिया है। नाटक संवाद–काव्य होता है, अतः इनमें प्रायः मार्मिक प्रसंगों को लेकर ही रामकथा को प्रस्तुत किया गया है। कथा को सुखान्त बनाने के लिए कैकेयी के दोष का निवारण किया गया है और राम–सीता का पूर्वानुराग दिखाकर संयोग शृंगार की अवतारणा की गई है।

जहाँ तक पुराणों का प्रश्न है, पुराणों में हमें रामकथा मात्र संकेत रूप में ही मिलती है। रामकथा से संबंधित प्रमुख पुराण हैं – हरिवंश पुराण, विष्णु पुराण, भागवत् पुराण, अग्नि पुराण, पद्मपुराण एवं शिवपुराण आदि।

आलवार भक्तों ने भी रामकथा के विकास में अपना योगदान दिया है। आलवार भक्तों ने उत्तर भारत के रामतीर्थों की यात्रा की। ये भक्त राम और कृष्ण की भक्ति में अंतर नहीं मानते थे। इन्हीं से वैष्णव भक्ति की परंपरा चली। इनके प्रथम आचार्य 'रघुनाथ' ने आलवारों की रचनाओं का संग्रह किया जो 'प्रबंधकम्' के नाम से जाना जाता है।

हिंदी में रामकथा की दीर्घ परंपरा मिलती है। आदिकाल में भले ही कवियों का ध्यान राम की ओर नहीं गया क्योंकि वे तो अपने अपने आश्रयदाता राजाओं की चरण–वंदना में ही लगे हुए थे परंतु फिर भी 'पृथ्वीराजरासो' में रामकथा मिलती है। 'विष्णुदास' ने वाल्मीकि रामायण का हिंदी अनुवाद 'रामायन–कथा' नाम से किया। 'ईश्वरदास'ने भी रामकथा से संबंधित रचनाएँ लिखीं।

उनकी 'भरत मिलाप' एवं 'अंगद पैज' रचनाएँ इसकी पुष्टि करती है।

रसिक संप्रदाय के भक्तों ने तो 'राम' के साथ व्यक्तिगत व घनिष्ठ संबंध स्थापित किए। किसी ने स्वयं को सीता की सदी और किसी ने राम की विवाहिता माना। कुछ संतों ने तो स्वयं को राम का सखा भी माना है। रसिक संप्रदाय के भक्तों ने राम को दद्दा या भैया साहब कहकर संबोधित किया है। मिथिलावासी 'सूरकिशोर' जी सीता को पुत्री और राम का दामाद मानकर उनकी उपासना करते थे। 'प्रयागदास' राम को बहनोई मानते थे। मुख्य रसिकोपासक कवि 'अग्रदास' स्वयं को 'अग्रअलि' कहते थे। इन्होंने 'रामभजन मंजरी' और 'रामाष्टयाम' नामक रचनाएँ लिखी। अग्रदास के शिष्य 'नाभादास' ने रामचरित्र के कुछ पद और अष्टायाम की रचना की।

'तुलसीदास' ने ब्रज और अवधी में रामकाव्य लिखे। तुलसी कृत 'रामचरितमानस' के संदर्भ में उदयभानु सिंह 'तुलसी–दर्शन–मीमांसा' में लिखते हैं – "उन्होंने अपने साहित्य में विभिन्न मस्तिष्क दर्शनों एवं धार्मिक संप्रदायों की मौलिक मान्यताओं का समन्वय करते हुए श्रुतिसम्मत रामभक्तिदर्शन की प्रतिष्ठा की।"[2] 'रामचरितमानस' बरवै रामायण, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, दोहावली, कवितावली, गीतावली, कृष्ण गीतावली, रामललानहछू, विनयपत्रिका, रामाज्ञा प्रश्नावली आदि तुलसीदास द्वारा रचे गए प्रमुख प्रामाणिक ग्रंथ हैं। तुलसीदास के अतिरिक्त केशवदास, सेनापति, हृदयराम, नरहरिदास, लालदास और सूरदास आदि ने भी रामकथा का वर्णन अपनी रचनाओं में किया है। केशवदास ने 'रामचन्द्रिका' में रामकथा का उल्लेख किया है। सेनापति कृत 'कवित्त–रत्नाकर' की चौथी एवं पांचवीं तरंगों में रामकथा वर्णित है। हृदयराम ने 'हनुमन्नाटक' में सीता स्वयंवर से लेकर राम के राज्याभिषेक तक की कथा का वर्णन किया है। नरहरिदास कृत 'पौरुषेय रामायण' रासो शैली में लिखा गया है। लालदास कृत 'अवधदास' में रामजन्म से लेकर वनगमन तक की कथा है। सूरदास कृत 'सूरसागर' के प्रथम एवं नवम् स्कन्ध में रामकथा का वर्णन है।

रीतिकाल में भूपति कृत 'रामचरित रामायण', 'गुरु गोविन्द सिंह कृत 'गोविन्द रामायण' अथवा 'रामावतार' एवं पद्माकर कृत 'राम रसायन' प्रमुख हैं।

आधुनिक काल में रामकथा को आधुनिक युग के अनुरूप प्रस्तुत करने का प्रयास दिखाई पड़ता है। इसमें राम के मानवीय स्वरूप को उजागर किया गया है। रामकथा के उपेक्षित पात्रों को महत्त्व प्रदान किया गया है। जैसे उर्मिला व कैकयी आदि को महत्ता प्रदान की गई है। कुछ लेखकों की रामकथा पर मार्क्सवाद का प्रभाव भी लक्षित होता है। यही कारण है कि उन्होंने रावण को शोषक के रूप में प्रस्तुत किया है। आधुनिक काल में मैथिलीशरण गुप्त (साकेत), अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध (वैदेही वनवास), बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (उर्मिला), हरदयालु सिंह (रावण), निराला (राम की शक्ति पूजा), नरेश मेहता (शबरी), नरेश मेहता (संशय की एक रात) आदि ने रामकथा से संबंधित प्रमुख रचनाएँ लिखीं। गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रेष्ठ महाकाव्य 'रामचरितमानस' लोक–सामंजस्य का आधार भी 'राम' के नायकत्व से बन सका। एस० एस० प्रसाद 'रामचरितमानस का संदेश' में स्वीकारते हैं – "गोस्वामी तुलसीदास भारत के महान संत–कवियों में एक हैं। संसार में जितनी ख्याति महाभारत और गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस को मिली है, शायद ही किसी अन्य महाकाव्य को मिली है।"[3]

निष्कर्ष

हिंदी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में भी रामकथा लिखी गई है। गोस्वामी जी द्वारा 'रामचरितमानस' के संदर्भ में मर्मज्ञ विद्वान उदयभानु सिंह 'तुलसी–काव्य–मीमांसा' में लिखते हैं – "रामचरितमानस की असाधारण लोकप्रियता के कारण उसकी बहुसंख्यक प्रतियाँ देश के विभिन्न भागों में पायी जाती हैं।"[4] हिंदीतर भाषाओं में बंगला साहित्य में 'कृतिवास रामायण' और 'मेघनाद वध' विशेष प्रसिद्ध हैं। मराठी राम साहित्य में 'भावार्थ रामायण' व समर्थ रामदास कृत 'रामायण' उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त गुजराती, असमिया, उड़िया, तमिल साहित्यों में भी रामकथा के प्रसंग मिलते हैं।

संदर्भ सूची

1. रामकथाः उत्पत्ति और विकास, रेवरेंड फ़ादर कामिल बुल्के, द्वितीय संस्करण, 1962, हिंदी परिषद् प्रकाशन, प्रयाग विश्वविद्यालय, पृष्ठ–739
2. तुलसी–दर्शन–मीमांसा, उदयभानु सिंह, प्रथम संस्करण, 1951, लखनऊ विश्वविद्यालय, भूमिका–भाग
3. रामचरितमानस का संदेश, एस० एस० प्रसाद, प्रथम संस्करण 2004, राधास्वामी सस्तसंग, ब्यास, पंजाब, भूमिका–भाग
4. तुलसी–काव्य–मीमांसा, उदयभानु सिंह, प्रथम संस्करण 1966, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–97–98